R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 24 | अंक 6 | रविवार, इलाहाबाद, 30 जून 2024 | पृष्ठ 6 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

कविता में भाव ताव,
का कोई नहीं जवाब ।
तुलसी, कबीर, सूर की,
बातें हैं लाजवाब ।
कितना लिखो पर वह ही है ,
हिंदी के सरताज ।

तो बात महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की हो रही है। कविता के क्षेत्र में नारी मन का दर्प जितनी सूक्ष्मता के साथ व्यक्त होता है उसका जवाब लाजवाब है।
बानगी देखिए

जीवन का सब लेखा जोखा,
सारा भरा किताब।
जितने किस्से हैं सुख-दुख के,
उसके पास हिसाब।।
खोल उसे फिर से पढ़ लेना,
बिखरे हैं सतरंग।

नोएडा की अर्चना कोहली 'अर्चि' की इस रचना को पढ़िए और समझिए कि वह अपनी पंक्तियों में कितनी सार्थक बातें कर रही हैं। इस बार के महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में इन्हीं की कविता पुरस्कृत रचना के रूप में दी जा रही है। अब तक महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में हजारों हजार से ऊपर रचनाएं छप चुकी है। विविध बिम्ब विचारधारा से लबरेज महिला रचनाकारों की कुछ रचनाएं निश्चय ही भविष्य में मील का पत्थर साबित होंगी।
एक और बानगी देखिए -

तोड़ कर दिल गयी दिल्लगी यार की,
खूब हमको मिली है सजा प्यार की।
इम्तहाँ ये बहुत ही कठिन था मगर,
ज़ख्म दिल पे सहे बात की प्यार की।

बिजनौर की ऋतुबाला रस्तोगी की इस ग़ज़ल की रवानगी देखिए। गजलकारा ने बड़े मनोयोग से अपनी रचनात्मक ऊर्जा को इस रचना में व्यक्त किया है। महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में निरंतर भाव का खूबसूरत दर्पण नजर आ रहा है। अंक कैसा लगा प्रतिकृया जरूर दें ।
अंत में -

खूब कहा है तुमने भी तो ,
राज-राज और राज का काज ।
हम भी थोड़ा देख रहे हैं ,
कहां-कहां बजता सरताज ।

उमेश श्रीवास्तव

पुरस्कृत रचना

फिर से पुस्तक भरे उड़ान

जीवन का सब लेखा जोखा,
सारा भरा किताब।
जितने किस्से हैं सुख-दुख के,
उसके पास हिसाब।।
खोल उसे फिर से पढ़ लेना, बिखरे हैं सतरंग।
गढ़े शब्द जो तनहाई में, पढ़कर होते दंग।।

हँसी अधर पर जब भी आती,
बजता मन में साज।
कभी दर्द अंतस में उभरे,
सब इसमें ही राज।।
पर क्या समझी पीड़ा उनकी,
चढ़ती जिन पर धूल।
सभी सँजोया होता इनमें,
फिर भी मन में शूल।।
गढ़ शब्दों को लेखक बनते, सबसे पाते वाह।
पर क्या पढ़ते वे उनको हैं, सुनते कभी कराह।।
अलमारी से प्रतिदिन झाँके, पर छाया है मौन।
व्यस्त सभी मोबाइल में हैं, पढ़े उसे है कौन।।
बसी महक जो पुस्तक में है,
वह अब गिरी धड़ाम।
भाव किलो के अब बिकती है,
करना होगा काम।।
अभी नहीं दिन स्वर्णिम बीते,
करना सदा प्रचार।
प्रेमचंद-दिनकर सब इसमें,
करना है उद्धार।।
हर युग की जिसमें गाथा है,
रखना उसका ध्यान।
हटा गर्द को इसको पढ़ना,
फिर से भरे उड़ान।।

अर्चना कोहली 'अर्चि'
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

कविताएं

ममता की मूरत माँ

कोख में तेरे रही बनकर तुम्हारी बहुमूल्य दौलत,
में आई इस संसार में माँ तुम्हारी बदौलत।
कदम रखते ही संसार में देखा तुम्हारा चेहरा,
तुम्हें देखकर समझ पाई मैं,
माँ की ममताष्ठहोता है गहरा।
गोद से लेकर चलने तक का
फ़ासला तुमने मुझे सिखाया,
लड़खड़ाते कदमों को मंजिल तक
पहुँचने तक का रास्ता तुमने मुझें दिखाया।
भूख लगे इससे पहले खाना सदा खिलाया,
निवाला अपना भी माँ तुमने मेरे लिए बचाया।
आखों को मेरे तू झटपट ही पड़ जाती,
आसू खुशी या गम के हैं
माँ तू देखते ही समझ जाती।
माँ, मेरे खातिर तुमने रातों के नींद को गवाया,
उफ़ तक ना करके सदा मुझे गोदी में सुलाया।
मेरी हर छोटी-बड़ी ख्वाहिशो को
पूरा करने का जिम्मा तुमने निभाया,
मेरे खातिर माँ सदा तुमने
कुर्बानी को गले लगाया।
मेरे उज्जवल भविष्य के लिए
सोचा नहीं दिन या रात,
मेरे तरक्की के चलते हर मोड़
ऐट दिया मेरा साथ।
इस रिश्ते का लगा नहीं सकता कोई भी मोल,
हर रिश्ते के आगे
माँ का रिश्ता होता है अनमोल।
हर रिश्ते कि आगे
माँ का रिश्ता होता है अनमोल।

अनुपमा प्रधान
मेघालय

स्त्री है न ....

ढोती बोझ जिम्मेदारियों की
हैं विषम परिस्थितियाँ
अर्थ अर्जन की चुनौतियाँ
नहीं घबराती, न हार मानती
स्त्री है न.....
सिर पर रख ईटों को
साथ ही स्नेह लुटाती
पीठ पर बाँधे कान्हा को
मुदित मन पाँव धरती

कविताएं

स्त्री है न .....
खेल-खिलौने दे न सकी
माखन-मिश्री खिला न सकी
पर ममता की है सागर
ममत्व की छाँव में रखती हर प्रहर
स्त्री है न .....
ईटों की भट्टी से लेकर
घर तक है साथ निभाती
अर्द्धांगिनी से माँ की यात्रा
प्रसन्नचित्त हो तय करती
स्त्री है न .....।

डॉ अनीता पंडा 'अन्वी'
शिलांग

शहर बन रहा है मेरा गाँव

पेड़ कट रहे हैं
बुलडोजार चल रहा है
गिराए जा रहे हैं रड, मिट्टी,रेत,गिट्टी
सारी परेशानिओं की होगी छुट्टी
दफ्तर बनेंगे, पक्की सड़क बनेगी
आधुनिक प्रविधियों की सहुलियत होगी
शहर बन रहा है मेरा गाँव
नही मिलती है सुस्ताने के लिए थोड़ी छाँव।
कुछ मित्र थे मेरे, कहीं दूर चले गए
सुबह सुबह आते थे मुझे जगाने
शाम को कलरव करते थे
शायद कहते थे 'हम आ गए'
आजकल वे नहीं आते
बसेरा ही छूट गया कैसे आते ?
कांगें के नासपति बागान से
वो गिलहरियों की जोड़ी नहीं आती
मेरे घर के गुड़हल के पौधे में खेलने
बागान ही रहा नहीं
वे चले गए होंगे कहीं
रहेंगे कहाँ ?
वो बाँस की झूरमूट भी तो नहीं रही
जहाँ पवन बाँसुरी बजाया करता था कभी कभी
सब कुछ बदल रहा है, बदल गया
मेरा गाँव बदल गया
शहर बन रहा है मेरा गाँव
नहीं मिलती है सुस्ताने के लिए थोड़ी छाँव।

गीता लिम्बू
शिलांग -6

ग़ज़ल

अपना जो कभी था वही बन गया क्यों बेगाना
ज़िन्दगी अपनी मुफ्त में बन गयी क्यों अफसाना।
रंग बिरंगे फूल हैं प्यारे,कागज़ के हैं सारे
खुशबू इनमें थी नहीं,भंवरा हो गया क्यों दीवाना।
ता उम्र शमा जलती रही परवाने की खातिर
बुझती शमा को देखने आया क्यों परवाना।
रंजिशें हसद और नफरतें लेकर हमें क्या पाना
सबको मालूम है
यह जब दुनिया छोड़ क्यों जाना।
पेड़ों की डालियों पर
पक्षियों का है लगता मेला
दिल को सुकून देता है चिड़ियों का क्यों चहचहाना।
मुक्तसर सी ज़िंदगी है हंसके है हमको जीना
छोड़ो सभी गिले शिकवे हो जाओ न क्यों मस्ताना।
जिन्दादिली खलूसे महोबत इन से है
अपना नाता
फिर भी गोजा रश्क
यूं करता है क्यों ज़माना।
अपना जो कभी था
वही बन गया क्यों बेगाना
ज़िन्दगी अपनी मुफ्त में
बन गयी क्यों अफसाना।

सुनीता भट्ट गोजा
जम्मू-कश्मीर जम्मू।

पतझड़ एक ऐसा भी

सूखी डाली रास्ते में,
लैम्प पोस्ट के सहारे लटक रही थी,
पेड़ पौधों की क्षमता नही उसे सहारा दें,
देना तो चाहते हैं सहारा,
अपने गले से लिपटाकर रखना चाहते हैं वे,
पर मजबूर हैं,
कुछ अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण,
तो कुछ खुद ही लिपटे हुए हैं, किसी ओर के सहारे।
सूखी डाली सोचे,
जिस दिन मैं थी हरी-भरी,
सूखे पत्तों के जगह
हरे भरे पत्तों-फूलों से झुकी हुई,
नई नवेली दुल्हन जैसे दिखती थी मैं,
जो भी गुज़रते,
फूलों को तोड़,
इधर- उधर फैलाते,
आनंद उठाते,
मस्तमौला सा गुज़र जाते,
आज मुझमें पतझड़ आ गया है,
अब बस झड़ने का इन्तेज़ार कर रही हूँ।

मल्लिका दे विष्णु

चाँद आकाश के संग -संग चलता रहा

तारों भरा आसमां चांद
संग - संग चलता रहा।
जर्रा- जर्रा जमी का चमकता रहा
जिस्म जलता रहा दिल पिघलता रहात
चाँद को देखकर चाँदनी रात में
कोई हँसता रहा कोई रोता रहात
रात भर चांद,,,,,,
कोई कसमें वफा की खाता रहात
कोई कसमों को तोड़ता रहा
कोई आगोश में समाता गया
कोई आगोश से फिसलता गया
कोई दिल में समाता गया
कोई दिल से दूर जाता गया
रात भर चांद,,,,,,,
रात रानी चमेली सी महकी रजनीगंधा की सौगंध ल
गती भलीत
चाँद के आगोश में दुनिया पाली
चाँद की हकीकत देखी ऐसी भी भली
चाँद महबूब का,चाँद सुहागन का
दूज का चाँद,ईद का चांद
चाँद करवा चौथ का रस्में निभाता रहा
रात भर चाँद संग- संग चलता रहा,,,,,,
पूर्णिमा का चाँद दिलकश बना
चाँद सब कुछ बना रोटी बना सका
चाँद मुनिया की भूख मिटा न सका,,,,,
चाँदनी रात में चाँद के साथ में,,,
चंद पैसों की खातिर कोई लुट गया,
कोई लूट ले गया
पूनम की उजली रात अमावस की हुई।
चाँद रुसवा हुआ,चाँद बेवफा हुआ
वह सिसकती रही, जिस्म गलता रहा,
आत्मा मरती रही
आँसुओं की तरह रात भर
ओस झर -झर गिरती रही,,,
तारों भरा आसमाँ रात भर
चांद संग -संग चल ता रहा।

श्रीमती छाया त्रिवेदी
जबलपुर मध्य प्रदेश

'पर्यावरण '

वातावरण से शुद्ध हवा न
जाने कहाँ खो गई,
ये कैसा रक्तबीज,जो मशीन है बो गई।
यकायक एक जान सदा के लिए सो गई,
क्योंकि
साँस लेने वाली हवा महँगी हो गई।।
भोपाल पीड़ितों को हम भूल
गए हैं,
जाने कितने दुःख सहे और सह भी रहे हैं,
उसी उद्योग से, आज हमारे सीने तन रहे हैं,
जिस उद्योग में हमारे कफ़न बन रहे हैं।।
सुनो साथियों
रोकी है धड़कन पेड़ों की हमने,
जड़ से उन्हें काटकर हमने ही,
पीछे से अपने पर ही वार कर लिया है हमने
सच में अपने आप पर ही वार किया है हमने।।
बमों का विस्फोट किया है हमने
थोड़ी सी ज़मीन बचाने के लिये-
अरे, कितनी जगह चाहिए,
बोलो,कितनी जगह चाहिए
एक तन को समाने के लिये
अब भी सुधर जाओ बन्धु
पेड़ों को काटने की श्रृंखला को
डट कर मज़बूती से तोड़ दो।
विश्वास की डोर थाम
पर्यावरण बचाने की राह पर चलें चलें
एक कदम बढ़ाओगे तो
सौ कदम साथ चल पड़ेंगे।
पर्यावरण सुरक्षा की शिक्षा देंगें
तो सैकड़ों हाथ हमारे साथ संकल्प लेकर अवश्य बढ़ेगें।
एक बार कदम बढ़ा कर तो देखो
हम सभी साथ देंगे
साथ देंगे-------

पुष्प लता भटनागर

पुस्तक

जीवन की पृष्ठभूमि है पुस्तक,
जो बंधी है एक बंधन में।
कागज के टुकड़े नहीं,
संगठित हो ज्ञान के भंडार हैं।
पुस्तक बड़ी अनमोल है,
संस्कार,संस्कृति को बचाने।
पहचाने का एक माध्यम है,
सीखने का खजाना है।
पुस्तक की आत्मकथा कोई आज की नहीं,
कई सालों का इतिहास है।
कभी-कभी एक पुस्तक भी
जिंदगी बदल सकती है।
कभी-कभी एक पुस्तक का
पन्ना भी रुला सकता है,
कभी-कभी एक वाक्य भी
जीवन का मकसद सीख सकता है!!

अनीता दुबे

पुस्तक

पुस्तक मातुश्री जान,
जीवन दीपक मान,
मित्रता हृदय माना,
मम उर बसिए।
निराली पुरानी प्यारी,
पढ़ती कहानी सारी,
इसका कोष न खाली,
वीर गाथा सुनिए।
ज्ञान का भंडार मिले,
धर्म का संचार होवे,
जीवन सुमन पायें,
महकते रहिए।
संपूर्ण दुनिया सैर
करती अतीत बोध,
अद्भुत दुनिया पाती,
वेद ग्रंथ पढ़िए।

उमा मिश्रा प्रीतिङ

कहमुकरी

रात रात भर मुझे सताता
सोने ना दे मुझे जगाता
भाए जैसे मियां को बीवी
क्या सखि साजन, ना सखि टीवी
कितना है वो भोला भाला
सारे जग से है वो निराला
मेरा तो वो नाच नचैया
क्या सखि प्रीतम, ना कन्हैया
घरों में जिससे उजाला है
जिसने रोशन कर डाला है
दिन रैन कटें हैं गिन गिनकर
क्या सखि बालक,न सखि दिनकर
कभी बरसता कभी गरजता
सुनकर उसे दिल है लरज़ता
चलूँ सम्भलकर कदमों को धर
क्या सखि साजन, ना सखी जलधर
मीठी मीठी बोली गाए
सबका मनवा वो हरषाए
उसके बिना न आए चैना
का सखि साजन, ना सखि मैना
बदरा देखे तो मुसकाए
देख उसे फिर रहा न जाए
वही तो मेरा है चित चोर
क्या सखि प्रीतम, नहीं रे मोर
दिल को चैन सुकूँ है देता
मन की मेरे सब सुन लेता
रखे भीतर मेरी बातें क़ैद
क्या सखि साजन, ना सखी वैद
सुख दुख बाँटू उससे अपने
पूर्ण करे सब मेरे सपने
मेरे लिए खुशियों की सेज
का सखि प्रियतम, नहि सखी मेज
विनती करूँ जोड़ कर हाथ
कभी न छूटे इसका साथ
कर्णप्रिय है इसकी टोन
का सखि साजन, न सखि फ़ोन

'नीलोफ़र '

तुम किधर से आते हो

मुझे मालूम नहीं तुम किधर से आते हो,
आते हो और ख्यालों में गुम हो जाते हो।
मुझे मालूम नहीं ---
जिंदगी प्यार के रंग में ही रंगी जाती है,
चांद तारों की ये दुनिया बड़ी निराली है,
प्रीत का एक रंग और लग जाते हो।
मुझे मालूम नहीं तुम किधर से आते हो
जितना डूबे हैं इस प्यार के सागर में हम,
उतने मोती मेरे दामन में भरे जाते हैं।
कभी बादल में बूंदों में नजर आते हो,
बिजली की कौंध में कुछ और
चमक जाते हो।
मुझे मालूम नहीं तुम किधर से आती हो।
प्रिय कृष्णा तुम फिर एक बार आ जाओ,
एक बार आओ और रास तो रचा जाओ,
बैर भाव भूलें सभी प्रेम का विस्तार करें।
हम सभी एक हैं यह फैसला सुना जाओ।
मुझे मालूम नहीं तुम किधर से आते,
हो आते हो और ख्यालों में
गुम हो जाते हो।
मौलिक रचना।

कविता उपाध्याय क्षिप्रा
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

सही मतदान - समस्या का निदान

जनमानस की सभी समस्या का
निदान मतदान है।
किसको देते वोट ये निज के
चिन्तन की पहचान है।।
एक - एक वोटों से सत्ता
सही हाथ जब आती है।
यही सही मतदान समस्या का
निदान करवाती है।।
एक वोट खातिर रिश्तों के
मोह जाल में मत फँसना।
दो दिन अनबन सह लेना सत् राह से हरगिज मत
हटना।।
यही गुजारिश करने सबसे
आज लेखनी पुनः चली।
भेद-भाव और जाति-धर्म को
भूलो कहती गली-गली।।
भाई-बन्धु का नाता हो
निःस्वार्थ तभी ये टिकता है।
एक वोट के खातिर क्यों
ईमान भटक-सा जाता है।।
चलो करें संकल्प आज
फिर सही निशान को चुनना है।
बटन दबाकर लोकतंत्र का मान
सभी को रखना है।।
चार दिवस के लिए सभी
इस धरा लोक पर आए हैं।
सही गलत का ध्यान रहे
मतदान के लिए जगाए हैं।।
आज का ये मतदान हमारे
कल का भाग्य बनाएगा।
बच्चा-बच्चा पढ़े- लिखे
मतदान सही कर पाएगा।।

डॉ0(कु0)शशि जायसवाल
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

उठो उठो

उठो उठो, चलो चले ये वक्त की पुकार है
रुको नही, झुको नही ये मत का अधिकार है
करें चुनाव भविष्य का,लोकतंत्र की गुहार है
वोट की शक्ति से षड्यंत्र पर प्रहार है
उठो उठो,रुको नही,
जन जन में यह प्रचार है।
है दूर अभी मंजिल की पथ बड़ा कठिन है
सोचे और समझे की प्रश्न बड़ा कठिन है
अपने हितों से उठकर जो सोच लिया हमने
इन नेताओ का क्या इनका यही व्यापार है
उठो उठो, रुको नही ये वक्त की पुकार है।
देखा जो आज सपना तो कल पूरा भी होगा
सही रहा जो मुखिया तो
घर अपना भी होगा
दे जो रोजी रोटी और सम्मान का जीवन
सभी धर्मों का सम्मान एक समान भी होगा
उठो उठो, रुको नही ये वक्त की पुकार है।
हिन्दू और मुसलमान के मतभेद सेबचना है
हमें पढ़ना पढ़ाना और आगे बढ़ना है
विकास की राह बाट कब से खड़ी जोहती
भारत मां के ताज पर रतन और जढना है
उठो उठो, रुको नही ये वक्त की पुकार है।

डॉ. मन्जू प्रकाश

खुदको पहचानो

खुद से खुद को प्यार करो
खुशबू बनकर बिखर तो करो
चाहत बनाकर सदा अपनों का
दिल में सबके बस करो
कभी बहता दरिया बन जाना
सूखे कांठ को संचित कर देना
पथ के पथिक की दुआ मिलेगी
अमृत बनकर बह जाना
जेठ की दुपहरी बनना ना तुम
खुद सावन बन बरसाना तुम

कविताएं

प्यारी कायल बना करके
एक मीठा गीत सुना जाना
इस भीड़ में तुम ताना ना रहो
जुगनू बनकर चमकना तुम
उम्मीदों का सूरज बनकर
नई किरण सा बिखर जाना
इस बंजर धरती को तुम
हरियाली से सजा देना
एक प्यार इंसान करके
ठंडी छांव जरा तुम बन जाना

ऋजु पांडेय
प्रयागराज गोविंदपुर

चांद की ओर

विकास के इस युग में
हम क्या बातें करें
एक तरफ एक स्त्री की सफलता
के योगदान का प्रतिफल चंद्रयान 3 का
चांद की ओर भेजा जाना है
दूसरी तरफ धरती पर स्त्री की
इज्जत को धूल धूसरित किया जाना है।
हर प्रश्न के उत्तर में स्त्री खड़ी है
हर युग में स्त्री छली गयी है
कभी युद्ध के कोण में खड़ी है
कभी प्रेरणा का स्त्रोत भी बनी है।
आज का युग उसकी खुद की लड़ाई है
अपनी इज्जत,सम्मान खुद ही
बचानी है नहीं आयेंगे कोई कन्हायी
चीर बढ़ाने को
स्वाभिमान,मान,सम्मान को
चीखकर-चीखकर खुद को बचानी है

प्रोफेसर (डॉ) सविता कुमारी श्रीवास्तव

फिर एक कहानी...

फिर एक...
कहानी लिख रही हूं मैं...
तुम्हारी अनकही बातें
लफ्जों में गढ़ रही हूं मैं...!
पीछे मुड़के देखा तो
राज ये समझ आया
कि सफरे जिंदगानी की
अपनी अलग कहानी है!
उसे लिखने की कोशिश में
यकीनन...दोबारा जी रही हूं मैं
फिर एक... कहानी लिख रही हूं मैं
समेट के रख दिए मैंने
सपने जो टूटे-बिखरे थे
ख्वाब नये इन आंखों में
दोबारा जड़ रही हूं मैं...!
फिर एक...कहानी लिख रही हूं मैं...
बहुत सोचा बहुत समझा
तब कहीं कथ्य बन पाया है
हर किरदार ने खुद को
जहाँ बखूबी निभाया है...!
कहीं प्रीत की वैतरणी
कहीं विरह की ज्वाला है
दुर्गम यह सफर सजना, बस
कोने से झांकता उजाला है...!
पर्वत मुश्किलों का जो
मेरे हिस्से में आया है
उत्तुंग शिखर पर उसके
तन्हा चढ़ रही हूं मैं....!
फिर एक...
कहानी लिख रही हूं मैं....

डॉ विमला व्यास

ग़ज़ल

बादलों से घिरा आसमाँ देखिए
भीगती इस ज़मीं को यहाँ देखिए
इश्क़ में अश्क बहते तो बढ़ती तपन
यूँ चमकती हुई बिजलियाँ देखिए
तिश्नगी जब बढ़ी हो गये एक वो
उफ़्क में ग़ौर से यह निशाँ देखिए
यूँ लगे चश्म सागर भरा अश्क हो
डूबता उसमें यूँ आसमाँ देखिए
तोड़ रचना' हदें यह मुहब्बत दिखी
फूल पर आ रही तितलियाँ देखिए

रचना सक्सेना

कुछ रिश्ते मिलते हैं मुश्किल से

माँ उनमें से एक है
रख सको संजोकर तो रख लो
ये सब रिश्तों में नेक है
मिल तो जाती है बिन मांगे
फिर मांगे से मिलती नहीं
नैया अपने जीवन की
उसके बिन चलती नहीं
मत सोचो उसके उपकारों का
तुम एहसान चुका दोगे
पर लौटाओगे कैसे वे पल
जो उसकी रातों के तुमने भोगे
आज माँ से बड़ा कोई नहीं
माँ वो एहसास है.
जो महसूस कर गए वो जी गये
जिनको माँ का साथ माँ का प्यार एहसास और आशीष
नहीं मिला वो खाली रह गए
ज़िंदगी में
बस खाली ही खाली रह गये
सच कहा है
कुछ रिश्ते मिलते है मुश्किल से
माँ उनमें से एक है
माँ उनमें एक है बस एक

डॉ प्रीति प्रसाद (प्रीत)
बिलासपुर (सी.जी.) मुंबई

सरस्वती वंदना

हे वीणावादिनी मां वरदायिनी तुम्हारा स्वरूप स्नेह का
सागर है!
भर देती हो ज्ञान उसमें
जिसकी खाली गागर है !
धरा के सभी प्राणियों को
जो समदृष्टि से देखती हो!
भा जाता है ये मृदुल स्वभाव
बिल्कुल मां जैसी दिखती हो !
जो तुम हो तो इस धरा पर
बह रही संगीत की बयार है !
तुम्हारे दिए विवेक और ज्ञान से
चल रहा ये संसार है !
जो तुम हो तो कोरे कागजों की
बदल रही जिंदगानी है !
तेरे आशीर्वाद से लिख जाता
हर कोई अपनी कहानी है !
जो तुम हो तो जिंदगी में रस है
इंसानो में जीने की ललक है !
कैसे कहुँ मुझे मेरे चारों
और बस दिखती तेरी ही झलक है !
हे माँ जो तुम हो तो बागों में
भवरें गुनगुनाते है गीत गाते है !
सावन में झूलों पर नार
नवेलियों की गीत मन जीत जाते है !
जो तुम हो तो सदियों से
सीख देते हमारे वेद पुराण है !
साधु संतो की मीठी और
सच्ची वाणी हमारे प्राण है !
कोशिश यही अपने मन के मैल को
अच्छे कर्मों से धोती रहूं !
अपना लेना शब्दों के
मोती को जो तेरी माला में पिरौती रहूं !

सीमा सिंघी
गोलाघाट असम

क्या तेरा क्या मेरा

क्या तेरा क्या मेरा...
सब है पराया
माया में मत फस बंदे
नश्वर है यह काया ।।
जन्म -मरण दोनों सत्य
पाप -पुण्य दोनों का करना है भुगतान
झूठ -सच में फंस मत बंदे
तभी होगा तेरा कल्याण ।
आस्था है एकमात्र किरण
जो प्रकाश फैलाता है
डूबते का तिनका है ईश्वर
वही नैया पार लगता है ।
सकारात्मक रहना है आवश्यक
जीवन में नव ऊर्जा जगाता है
हर अंधेरे को नष्ट कर
नूतन सवेरा लाता है ।।
भाग्य पर कभी आश्रित ना रहना
कर्म जीवन का सिद्धांत है
अपने भाग्य के निर्माता तुम खुद हो
तुम्हारे कर्म ही तुम्हारी पहचान है ।
क्या तेरा क्या मेरा....
सब है पराया....
माया में मत फस बंदे
नश्वर है यह काया ।

पूनम अग्रवाल,
गोलाघाट,असम

'जीवन जीना फूलों से सीखो'

हंसते मुस्कुराते फूल,
हमें जीना सिखाते हैं,
जीवन जीना एक कला है,
यह हमें बताते हैं।
धूप हो या बरसात,
फूल सदा मुस्कुराते हैं,
सुख दुख में हंसना,
यह फूल हमें सिखाते हैं।
चाहे कितनी भी मुसीबत आए,
हंसते हुए जीना,
फूलों को देखो,
हर हाल में इन्हे है खिलना...।
फूल हमें जिंदगी में,
आगे बढ़ना सिखाते हैं,
चाहे जो भी हो जाए,
हर हाल में मुस्कुराते हैं।
फूलों को देखो,ईश्वर का श्रृंगार सजाते हैं,
देवालय मैं हम पुष्पों का,
प्रभु को हार चढ़ाते हैं।
लगते हैं ये कितने सुंदर,
जब गजरे में सज जाते हैं,
फूलों का गुलदस्ता देकर,
हम मान-सम्मान बढ़ाते हैं।
यह फूल देखो सदा ही,
खिल खिलाते हैं,
फूलों को देखकर हम,
गीत गुनगुनाते हैं।
फूलों से तुम कुछ सीखो,
कांटो के संग रह कर मुस्कुराते हैं,
यह हमें सुख दुख में,
सम भाव से जीना सिखाते हैं।
फूल त्याग भावना रखते,
लोगों पर बिछ जाते हैं,
मंडराते हैं इनके सिर पर भौंरे,
फिर भी नहीं घबराते हैं।
जिंदगी जीने की कला हमें,
यह फूल सीखाते हैं,
कभी अभिमान मत करना,
हमें यह फूल बताते हैं।

रंजना बिनानी काव्या
गोलाघाट असम

भजन

छोड़ो जग में कुछ नहीं,
सब माया का भ्रम जाल है।
करना है सो जल्दी कर ले,
यह जग मकड़ी जाल है।।टेर।।
यार दोस्त तब तक अपने,
जब तक पास में माल है।
खुद के बुने में खुद ही फसते,
यह जग मकड़ी जाल है।।
छोड़ो जग में.....।।1।।
अपना हाल बेहाल भूलकर,
बंदा रखता सबका ख्याल है।
मां-बाप का बुढापा वृद्धाश्रम,
आज औलाद का यह हाल है।।
छोड़ो जग में.....।।2।।
दुनिया है एक रंगमंच,
जिंदगी एक माया जाल है।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ।

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332

Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

कविताएं

प्रेम,प्यार,ममता,स्नेह ये,
सब मुफ्त के कदमताल है।।
छोड़ो जग में.....।।3।।
काम,क्रोध,मद,लोभ,मोह,
सब झूठा भ्रम जंजाल है।
भीतर का कुछ बोध नहीं,
सिर्फ बातों का उछाल है।।
छोड़ो जग में.....।।4।।
राम सुमिरले सुकृत करले,
प्रभु चरणों में मालामाल है।
बाल न बांका कर सके कोई,
यह प्रभु की टकसाल है।।
छोड़ो जग में.....।।5।।

सरला बजाज
गोलाघाट असम

अग्नि की ज्वाला भी मैं हूं

अग्नि की ज्वाला भी मैं हूं
सृष्टि का नायाब तोहफा भी मैं हूं
हां मैं नारी हूं।
पिंजरे में परिंदे भी आबाद नहीं रहते,
अब छोड़ भी दो उनको
फरियाद नहीं करते,
दीपक को संभाला है
इन तेज़ हवाओं में,
फानूश की कोशिश क्या
ईजाद नहीं करते,
करते न वफा मुझसे,
मजबूर समझ कर वो,
हम आह भरे दिल से
संवाद नहीं करते,
मंज़िल पर नज़र रखते
आबाद जहां अपना,
हर काम सफल हो,
कुछ बरबाद नहीं करते,
तासीर मुहब्बत की
अक्सीर बदल देती,
हर मोड़ मुहब्बत के
प्रतिवाद नहीं करते,
आंखों में मुहब्बत के
परचम भी लहरते हैं,
उसे छुप के ज़माने से
बेस्वाद नहीं करते,
दुनिया जो मुहब्बत की
इस दिल ने बसाई थी,
खुद देख ले ज़ालिम,
अवसाद नहीं करते,
आहों को'मनोरम' जी
दाबे हुए रखना है,
बेचारगी का अपने
प्रतिवाद नहीं करते,

मनोरमा श्रीवास्तव मनोरम'

मीठा एहसास

सृष्टि की गोद में,
मां - बाबा के आंगन में,
जब मैं एक खिलौने सी,
खुशियों की बहार बन छायी।
मीठी किलकारियों से,
गुंजन चहुं ओर फैलाती,
छोटे - छोटे हाथ है इसके,
छोटे से मुंह से निकले बोल समझ न पांऊ।
चांदी का सुंदर सा चंद्रमा,
मां ने मेरी तरह इसके भी गले में डाल ा था,
राह में आए पत्थरों को किनारे कर,
हम दोनों को बुरी नज़र से
बचाया था।
एक तरफ लटकती मेरी गर्दन पकड़,
मेरी छोटी सी दीदी जब गोद में खिल ाती थी,
दादी सी लोरियां सुनाती थी,
जिसे देख बूढ़ी ममता भी
शर्माती थी।
मासूम से छोटे - छोटे हाथों को पकड़,
साथ - साथ बढ़ते हुए,
हम गीत गाया करते,
एक सांस में लम्बे सुरों को
सजाया करते,
निज प्यार से प्यार का
साथ निभाया करते।
ये हम बहनों का सखियों सा प्यार,
लड़ना - झगड़ना, रूठना - मनाना,
जो हमारे प्यारे रिश्ते का आधार,
ईश्वर का सबसे सुंदर उपहार है।
मां - बाबा की बगिया को,
हम चिड़ियों ने ही चहकाया है,
पांवों में घुंघरू की झनकार से
चलते चलते,
थक गये तो बाबा ने
कंधों पर बैठाया है।
मां की आंखों का तारा बन ये,
पिता का अभिमान बढ़ाती हैं ये,
ईश्वर कृपा निज साथ लिए,
ज़िन्दगी में कुछ कर गुजरने की
चाह लिए,
दुनिया सुवासित करने चलीं हैं।
दुनिया सुवासित करने चलीं हैं।।

सरिता कपूर

चमक रहे सितारे

जब जब देखूं आसमाँ को
बडे प्यारे लगते नजारे
झिल मिला कर कई वहाँ पर
चमक रहे सितारे ।।।।
कोई छोटा कोई बडा
तो कोई तेज रौशनी वाला
सात सात जब साथ में चमके
लागे मन को प्यारा ।।
धीमी - तेज - मध्यम किरणों में
हैं अपने -अपने गुण
आसमाँ के आँगन में पूरे आत्मविश्वास से
खिलते हैं वो होकर निपुण ।।

अर्चना झा अन्नू
दिल्ली

सोचो !कि ऐसा होता

सोचो !कि ऐसा होता
तो कैसा होता...
बादलों को ओढ लेते
और तारों का होता बिछौना अपना
जो कही आसमां में होता
घर एक अपना।
चंदा मामा से सुनते फिर कहानियां
और चांदनी की गोद में सो जाते।
सुबह सवेरे उषा की किरणों से जगते
और सूरज चाचू के संग
काम पर जाते।
होती जब रात तो,
मां के आंचल में दुबक जाते
पंछियों की तरह उड़ते फिरते
और हवाओं की तरह गाते गुनगुनाते।
सोचो जो कहीं आसमान में होता
घर अपना।
रातें भी होती अपनी
और दिन भी होता अपना
खुशियों से भरा रहता फिर दामन अपना
सोचो कि ऐसा होता
तो कैसा होता !
जो कहीं आसमान में होता
घर एक अपना।

-सुमन चौधरी सुमन

गज़ल

तोड़ कर दिल गयी दिल्लगी यार की,
खूब हमको मिली है सजा प्यार की।
इम्तहाँ ये बहुत ही कठिन था मगर,
ज़ख्म दिल पे सहे बात की प्यार की।
आँख की सुर्खियाँ यूँ छिपा कर रखीं
खूब काजल लगा रात दीदार की।
फूल बनकर सजे हैं किसी के लिए,
औ' किसी के लिए
जिन्दगी खा़र की।
छोड़ कर चल दिए धूप से छाँव में,
याद रह जाएगी आखिरी बार की।
आँख खोले सभी देखते रह गए,
जान ही डाल दी जैसे किरदार की।

ऋतुबाला रस्तोगी

जिंदगी

कुछ इस तरह सुलग रही थी जिंदगी
धुंआ उठा,तपिश की आह निकली
चिंगारी सुलगी उठी थी इक कभी
आज लपटें बन जल उठीं
धुंआ उड़ा इच्छाओं का
धुंआ उड़ा विचारों का
धुंआ उड़ा खामोशी का
धुंआ उड़ा अरमानों का
उमड़ घुमड़ घनी काली घटा बन
शीतल छींटा पड़ेगा कभी
मन के मेरे तपते भावों पर
प्रेम का मलहम लगेगा कभी
आशाओं की उमंगों में
बहने लगा मेरा मन
जीने की इच्छा लिए
तृप्त होने लगा मन
समय का फिल चक्र चला
धुंए का गुब्बार उड़ चला
आंधियां भी वेग से चलीं
मन भी पवन सम उड़ चली
लपटों की तपिश ना तपाती है
धुंए से ना अब नजरें जलतीं हैं
ख्वाबों की चिता ना जलती है
अक्स की पहचान अब बनती है

दामिनी कालरा
किरतपुर,बिजनौर

कहीं प्यार न पाया

प्यार न जग में पाया,
मैंने प्यार कहीं न पाया।
प्यार देह से,प्यार गेह से,प्यार है धन-दौल
त से।
झूठी शान में उलझा है मन,
प्यार नहीं था सच से।
धर्म-कर्म में मन न लागे,
दुनिया ने भरमाया।
जग में प्यार.....
मात-पिता ने प्यार दिया क्या,
भैया ने दुलराया?
बहनों ने तो स्पर्धा में
मुझको सदा हराया।
सोच रही क्यों खोज रही मैं किससे क्या-क्या
पाया?
जग में प्यार.....
पति से प्यार,प्यार सन्तति से,चकाचौंध से
प्यार किया।
अंत समय पर प्यारे तुझको,
इन सबने ही त्याग दिया।
प्यार की खोज आज भी अनथक,नाहकजन्म
गंवाया।
जग में प्यार.....
यार भी मिले,सभी मतलबी,
दुख में काम न आवें।
दुर्व्यसनों के साथी हैं सब,
गर्त में हमें गिरावें।
मूरख मन यह खेल न बूझे,
कैसे लूट हराया?
जग में प्यार कहीं न पाया।

डॉ सुषमा त्रिपाठी

वोट

सारी पार्टियां आपस में लड़ रहीं,
तू तू मैं मैं कर आपस में झगड़ रहीं।
हर पार्टी जनता को लुभाने की कोशिश कर
रहीं,
अपने अपने वादों की
पोटलियों को गढ़ रहीं।
एक भी बातें न रह जाएं अधूरी,
ऐसी बातें कर रहीं,
नौकरियां,घर,सिलेंडर,जल आदि बातों पर चर्चा
चल रहीं।
उठो,जागो मानव भारत को है एक जुट करना,

संस्थापित 2001
संस्थापक : स्वर्गीय कन्हैया लाल, स्वर्गीय श्रीमती साधना
हिन्दी दैनिक/हिन्दी साप्ताहिक
◆ संयम ◆ संस्कार ◆ संतुलन
शहर समता
प्रयागराज से प्रकाशित
संपादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
प्रबंध संपादक
अरविन्द पाण्डेय
पंजीकृत कार्यालय: 289/238A, कर्नलगंज, (अनन्त भवन) प्रयागराज- 211002
M.: 9005239332, 9450482227
E-mail: shaharsamta@gmail.com
Website: www.shaharsamta.com

कविताएं

अपने मतदानों का हक समझ,
अपनी जिम्मेदारियों को निभाना।
अभी तो हम शहंशाह हैं अपने देश की भलाई को समझना,
कौन करेगा देश का विकास,
एक एक जोड़ को समझना।
अपने चक्षुओं को खोल अपने वोट का करो सही मतदान,
विकासशील देश को है
अग्रसर बनाना।
जनता न रहीं अब अज्ञानी,
खूब अपने मतदान का
अधिकार निभाती,
गांव हों या शहर हों शत् प्रतिशत अपना वोट देने को जाती।
अपनी धरा की माटी को संघटित करना,
जिसके विकास को देख सब दबाएं ङदांतों तल ` उंगलियांङ।
अब हम हैं न किसी से कम ये पहचान है बनाना,
हर क्षेत्र की बुलंदियों का डंका है बजाना,डंका है बजाना ...

डा.योगिता सिंह 'हंसा'

गजल

बिना मतलब की दुनियादारियां
अब कम समझते हैं!
मिले जो जख्म तो
उसको भी हम मरहम समझते हैं!!
हमें ना अब गिला-शिकवा कोई इल्ज़ाम वाल ों से!
हमें मालूम है ये सच,
हमें बस हम समझते हैं!!
तुम्हारा शुक्रिया कह दें,
तजुर्बे जो दिए हमको!
सुनो! हम कुछ नहीं कहते,
मगर हरदम समझते हैं!!
किसी के लब हिलें तब बात तो दुनिया समझती है!
किसी की खामुशी लेकिन महज हमदम समझते हैं!!
जिदों को छोड़कर आना जरा फिर देखना हमको!
सनम शिद्दत से तेरे दिल का हम आलम समझते हैं!!

सौम्या शर्मा

हे!पथ के स्वामी

मेरे हृदय में बसने वाले,
हे! मेरे प्रभु मेरे स्वामी।
तम को तुम हरने वाले,
हे! ईश्वर हे! अंतर्यामी?
मेरे जीवन से विश्वास,
कभी नहीं डिगने पाए।
आशाओं के मेरे मोती,
कभी बिखर न जाएं!
हे! मेरे पथ के साथी,
कभी तोड़ना ना विश्वास।
हर-पल रहना साथ मेरे,
तुमसे ही जीवन में प्रकाश!
मेरे हृदय कुंज में,
तेरी ही प्यारी सूरत है।
तुमसे ही सांसों की डोर,
तुमसे ही जीवन मेरा है !
जीवन के पथरीले पथ में,
तुम थामें रहना मेरा हाथ।
जीवन के अंधियारों में भी,
तुम सदा देना मेरा साथ !
हे! मेरे पथ के स्वामी,
तुम परछाईं बनके रहना।
मेरे सूने हृदय में तुम,
प्रेम का दीप जलाए रखना!!

सुषमा सिंह 'उर्मि'

कर्मवीर का जीवन दुष्कर

कड़ी धूप है आग बरसती,
सन्नाटा है छाया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर,
भला चैन कब पाया।।
स्वेद मृदा को तर रखता है,
श्रम फल आए मीठा।
मार प्रकृति की कर देती है,
अक्सर इसको सीठा।।
ताप शीत जल सहा कृषक ने,
अन्न आदि उपजाया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर,
भला चैन कब पाया।।
सीमाओं पर सैनिक देते,
अडिग रात दिन पहरा।
देश सुरक्षित हरदम रखते,
घाव झेलते गहरा।।
लगा जान की बाजी उसने,
अरि को धूल चटाया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर,
भला चैन कब पाया।।
श्रमिक बहा कर नित्य पसीना,
अल्प राशि तब पाए।
भूखा प्यासा वह बेचारा,
पकड़ उदर सो जाए।
पले अभावों में निज जीवन,
सबका घर बनवाया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर,
भला चैन कब पाया।।
कड़ी धूप या ऋतु ठिठुराती,
करती सेवा नारी।
कभी अन्नपूर्णा बन जाती,
शिशु पाले महतारी।।
नेह सूत्र से सबको बाँधा,
सबने है बिसराया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर,
भला चैन कब पाया।।

सीमा वर्णिका,

बन जाऊँ गुलाब.....

महक हो जाए गुलाब की तरह,
जहाँ में सुगंध फैलाऊं,
कांटों के बीच बसती हूं,
चुभन सहती हूं,कभी बन
गुलाब गुलिस्तां महकाऊँ।
इतना पवित्र मेरा भी
किरदार हो जाए
कि ईश के चरणों में समर्पित हो मंदिर महकाऊँ
कभी किसी जवान के पथ पर मैं बिछ सी जाऊँ
और कभी डाली पर खिल हवा संग इतराती जाऊँ
बन जाऊँ गुलाब,.....
जात पात से ऊपर उठ अपनी एक अलग
पहचान बनाऊं,
हिन्दू हो या मुस्लिम,मंदिर हो या मस्जिद,हर
जगह बस पुष्प बन सारा जहाँ महकाऊँ
बन जाऊँ गुलाब,.....
दिन भर रवि की तपिश सहूं, संध्या में फिर
शीतल पवन संग खिलखिलाती जाऊँ
और निशा जब अपना डेरा डाले, तो डर के
फिर पल्लव के सीने में
छिप मुरझा सी जाऊँ
चाह बस इतनी है कि,
प्रेम का प्रतीक मैं बन जाऊँ
महक हो जाए गुलाब सी
और मैं जहाँमें सुगंध फैलाऊं,
बन जाऊँ गुलाब,.....

श्रद्धा श्रीवास्तव
नोयडा

मश्वरा न दीजिये

चैन से बैठे रहने का
मश्वरा न दीजिये
हाथ बताइये जनाब
आप भी कुछ कीजिए
यूँही बैठे रहने से
चाय नहीं बन जाएगी
बाई भी जब आएगी
तो घंटी ही बजाएगी
इस दो वक्त़ की रोटी के
झमेले तमाम हैं
चैन से बैठ कर खाने को
करने पड़ते कई काम हैं
देखी है दुनिया मैंने भी
यकीन मेरा कीजिये
चैन से बैठे रहने का
मश्वरा न दीजिये

डा शिवानी चंद्रा

हर इंसां जहान का

हर इंसां जहान का,
देता पल पल घात
कदम कदम पर जाल है,
मिलती जीवन मात
चेहरे में वो राज छुपे,
कैसे पढ़े हर बात
सूरत खूबसूरत तो,
कालिख मन में रात
हाथों में कुछ भी नहीं,
हालत है बेहाल
मोह माया दौलत सब,
बुरा हुआ अब हाल
धरा पर मेहमान सब,
मती लगाओ दाग
छोड़ दो छल औ कपट,
तुम जाओ अब जाग
राम नाम भज लें सभी,
होवे पूरे काम
मिट जाए संताप सब,
मुख बसे जब राम
हे मानव मन साफ कर,
भर मन में विश्वास
सीरत पर तू ध्यान दे,
तभी बनेगा खास
वाणी बोले मधुर, ऐसा हो इंसान
हृदय में बस जाए वो,
सदा ही पाए मान
मैं नादान बालिका,
अवगुणों की खान
क्षमा करो माँ शारदे,
आशीष रखना ध्यान

अवंतिका विशाल'अवि'

ग़ज़ल

फ़ज़ा में गूँजते हैं रात दिन तराने से
बहार आती है जब तेरे मुस्कुराने से
करार आता है जिनके करीब आने से
रूकेंगीं धड़कनें उनके ही दूर जाने से
दिया है साथ हमेशा ही ज़ीस्त में जिनका
वो बाज़ ही नहीं आते हमें गिराने से
क़ज़ा जिसे भी बुलाएगी वो तो जाएगा
कोई भी रोक सकेगा न उसको जाने से
करीब हैं जो हमेशा से और हैं दिल में
सँभालियेगा उन्हें आप लड़खड़ाने से
नहीं खिलेगी कभी कोई भी कली दिल में
जली है दिल की ज़मीं तेरे ही सताने से
बुलंद हौसले जो साथ ले के चलते हैं
नहीं वो थकते हैं 'अनु' ख़ुद को आज़माने से

अनीता सिंह 'अनु'

गीत

प्रिय समर्पित गीत तुम्हें
'अल्पन 'की मुस्कान लिए,
जैसे नील गगन में वादल
सावन का सामान लिए।
ऋतुयें आईं चली गईं पर गीत अधूरे पड़े रहे,
नैनों में हम स्वप्न संजोए राहों में तेरे खड़े रहे।
मीत आएगा कब वह दिन
मन वीणा की तान लिए,
प्रिये समर्पित गीत तुम्हें
अल्पन की मुस्कान लिए।।
तेरे होठों पर होगा जब मेरे गीतों का श्रंगार,
साज सवांरे दिल की धड़कन
कब आएगा वह त्योहार।
मन की बगिया महक उठेगी
अधरों का रस पान लिए,
प्रिय समर्पित गीत तुम्हें
अल्पन की मुस्कान लिए।।
प्रिये समर्पित गीत तुम्हें अल्पन मुस्कान लिए।
जैसे नील गगन में बादल का सामान लिए।।

डॉ .अल्पना जैन
मालेगांव, नाशिक, महाराष्ट्र

ये दुल्हनों के पैर की श्रंगार है पायल।

1-नारी के सौंदर्य की मिसाल ये बनी
झनकार घुंघरुओं की
अहसास है पायल।
2-नारी के इस वजूद को,पहचानना अगर।
नारी के हर वजूद की
पहचान है पायल।
3-पायल का एक स्वरूप,
गणिका के घर पै है।
रसिकों की मस्तियों में
बसा मोड़ है पायल।
4-संगीत राग रंग की,
विधा को देखिए।
नृत्यांगना के पैर की
झनकार है पायल।
5-श्रंगार प्रेम राग की,
विधा को देखिए।
पल पल प्रणय के संग,
गूँधा हार है पायल
6-वीरांगना ने पैर से उतार ही दिया।
दुश्मन के संग जंग की तलवार है पायल।

प्रवीणा त्रिवेदी प्रज्ञा
नई दिल्ली।

मर्यादा पुरुषोत्तम

आज विराजेंगे मर्यादा पुरुषोत्तम
हमारे प्रभु श्री राम।
जयकारा गूंजे चारो दिशाओं में
गूंजे प्रभु का नाम।
आज घर आंगन, गांव गली,शहर नगर,
और मंदिरों को सजायेंगे।
मंगल गीत गायेंगे और दीप जगमगाएंगे।
बरसों बाद आई है ये भक्तिमय सिंदूरी शाम।
यह नववर्ष आया है लेकर
नया उत्साह और नई उमंग।
गूंजे शंखनाद, बाजे डोल नगाड़े,
झांझ मंजीरे और बाजे मृदंग।
लाखो राम भक्त कर रहे
घर घर पीला अक्षत(न्यौता)
पहुंचने का नेक काम।
धर्म भूमि है भारत और हम
ऋषियों की संतान।
अपनी सनातन संस्कृति का
हृदय से करते हैं सम्मान।
धर्म ध्वजा लहरायेंगे
बढ़ाएंगे देश की शान।
सार्थक हुआ है आज
लाखों भक्तो का बलिदान।
संतो की साधना,योगी जी मोदी जी

कविताएं

और उनके सहयोगियों के अथक परिश्रम
और देश प्रेम का है सुंदर परिणाम।
आज अवध में है विशाल
और भव्य आयोजन।
भक्तो का हृदय है पुलकित
और प्रफुल्लित है मन।
झूमे नाचे गीत गाये
होकर प्रेम मगन।
दुल्हन की तरह सजा है
देखो आज अयोध्या धाम।

रुदन भले पीड़ा से निकले,
मुख से सदा मुस्काती हूँ।
दर्द के ऊपरी सतह पर,
हंसता चेहरा लगाती हूँ।।
कभी वेदना मन की मुझपर,
निष्ठुरता आरोप लगाती है।
संस्कारों का वास्ता देकर,
कोमल मन बहलाती हूँ।।
कर्तव्यों की जंजीरों से,
अक्सर कदम बंध जाते हैं।
उन कर्तव्यों को कर्म बनाकर,
जिम्मेदारी सदा निभाती हूँ।।
कहीं औचित्य नहीं है मेरा,
सब रिश्ते पराये हो जाते हैं।
अनजानों से जोड़ कर रिश्ता,
सहृदय उन्हें मैं अपनाती हूँ।।
हर ऊँगली की छोर जो मुझ पर,
सदा सदा ही तन जाती है।
मैं हर ऊँगली में अस्तित्व बसाकर,
अपना व्यक्तित्व बनाती हूँ।।
उम्मीदें हर पल रिश्तों की,
आसक्त युगों से सदा रही है।
सहस्त्रों पीड़ाओं को सहकर,
मुख पे नकाब लगा मुस्काती हूँ।।

स्मृति मिश्रा 'रीति'

शक्ति,सती या अबला हूं

शक्ति,सती या अबला हूं ...
जवाब दो प्रभु मैं कौन हूं ..?
घनघोर पीड़ा की ताप से,
प्रभु अपनी तंद्रा से जाग गए ...
कहने लगे सुन लो प्रिये ..2
'मनु की अर्धांगिनी के रूप में
अंकुरण की भूमि हो तुम,
सृष्टि का श्रृंगार हो तुम।
इस जहां की आज और कल,
भूत भविष्य और काल हो तुम ...
भूत भविष्य और काल हो तुम।
मौन का सिंगार करके,
शौर्य की तलवार हो तुम।
मनु तो तुम, अपाला, घोषा हो तुम,
कल्पना चावला के रूप में..
भारत का सरताज हो तुम..
भारत का सरताज हो तुम..।
मृदुलता की तस्वीर हो तुम,
चांद की शीतलता लिए,
सूर्य सी अंगार हो तुम..।
दीप हो तुम,सीप हो तुम
शारदे का गीत हो तुम ..
शारदे का गीत हो तुम।
आंधियों से ना बुझे जो,
ऐसा जलता दीप हो तुम।
सूर्यमुखी के रूप में,
पारिजात की सुगंध हो तुम।
धूप हो तुम, शीत हो तुम,
बसंत दूतिका का रूप हो ...
बसंत दूतिका का रूप हो।
धर्म हो तुम कर्म हो तुम,
भागवत का अंश हो तुम।
और अब क्या कहूं प्रिये,
बस समझ लो आज इतना।
त्याग,प्रेम,और श्रद्धा लिए।
नारायणी का अवतार हो तुम।
नारायणी का अवतार हो तुम।

सतरूपा
जगदलपुर (छ. ग.)